

डॉ. मार्व विल्सन, भविष्यवक्ता, सत्र 5, भविष्यवक्ताओं को समझने के लिए व्याख्यात्मक सिद्धांत

© 2024 मार्व विल्सन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. मार्व विल्सन द्वारा पैगंबरों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 5 है, पैगंबरों को समझने के लिए हेर्मेनेयुटिकल सिद्धांत।

ठीक है, मैं शुरू करने के लिए तैयार हूँ।

आइए हम प्रार्थना करें, कृपया। हमारे पिता, हम इस्राएल के भविष्यवक्ताओं के लिए आपका धन्यवाद करते हैं। हमारे धर्मग्रंथ निश्चित रूप से इस ज्ञान के बिना अधूरे होंगे कि कैसे उन्होंने लोगों को आपके रहस्योद्घाटन की ओर वापस बुलाया, कैसे उन्होंने अपनी पीढ़ी को न्याय, नैतिकता में जवाबदेही के लिए बुलाया, साथ ही साथ यह आशा भी जताई कि न केवल उनकी पीढ़ी में नवीनीकरण हो सकता है, बल्कि इतिहास में ईश्वर की महान योजना वास्तव में एक गहन और गहन आध्यात्मिक नवीनीकरण होगी।

हम प्रार्थना करते हैं कि हम हमेशा ऐसे लोग बने रहें जिनके पास हमारी पीढ़ी के लिए संदेश हो और साथ ही भविष्य के लिए आशा का संदेश भी हो। आपका धन्यवाद कि हमारा राज्य अंततः एक गतिशील राज्य है जैसा कि आपने हमारे जीवन में प्रवेश किया है और जो इस जीवन से आगे आने वाले जीवन तक भी पहुँचता है। इसके लिए हम इस शुक्रवार की सुबह हमारे प्रभु मसीह के माध्यम से आनन्दित होते हैं।

आमीन। ठीक है, आपको याद दिलाने के लिए कुछ घोषणाएँ। मैंने अंतिम परीक्षा की तिथि के लिए पाठ्यक्रम में एक सुधार किया था।

मुझे लगता है कि आप सभी ने यह सुधार कर लिया होगा। अंतिम परीक्षा 16 मई को सोमवार को 2:30 बजे है। बस सुनिश्चित करें कि आपने पाठ्यक्रम में यह सुधार कर लिया है। साथ ही, मुझे अकादमिक सहायता केंद्र से एक ईमेल मिला है जिसमें बताया गया है कि उन्हें इस कोर्स के लिए एक नोट कीपर की आवश्यकता है।

आप में से कुछ लोग नोट्स ले सकते हैं और वे नोट्स की प्रतिलिपि बनाने का खर्च उठाएंगे और अगर आप ऐसा करने के लिए तैयार होंगे तो किसी को एक छोटा सा वजीफा भी देंगे। आपका नाम गुमनाम होगा, लेकिन अगर आप मदद कर सकते हैं, तो ASC में जाएँ और उन्हें बताएँ कि आप ऐसा करने के लिए तैयार हैं। आज मैं कुछ व्याख्यात्मक सिद्धांतों, भविष्यवक्ताओं और भविष्यवाणियों की शिक्षाओं को समझने के लिए कुछ व्याख्यात्मक सिद्धांतों का परिचय देना चाहूँगा।

मैं हेर्मेनेयुटिकल सिद्धांतों का उल्लेख इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि भविष्यवक्ताओं की व्याख्या करना हमेशा आसान नहीं होता। मुझे याद है कि मैं एक कक्षा में पढ़ा रहा था, मैं अपने मध्य-

बीसवें दशक में था, बोस्टन में पार्क स्ट्रीट चर्च में भविष्यवक्ताओं पर एक कक्षा पढ़ा रहा था। यह दस सप्ताह की मंगलवार शाम की कक्षा थी।

मैं यिर्मयाह और ईजेकील पढ़ा रहा था। उस समय मैं ब्रैंडिस यूनिवर्सिटी में स्नातक की पढ़ाई के पहले साल में था। पार्क स्ट्रीट में पढ़ने वाली एक महिला ने मेरी माँ को फ़ोन किया।

वह उसी शहर में रहती थी। उसने कहा, " तुम्हारा बेटा भविष्यवक्ताओं के बारे में कैसे पढ़ा रहा है? उसने स्नातक नहीं किया है, और उसने उसे दक्षिण-पश्चिम में एक प्रसिद्ध इंजील सेमिनरी का नाम दिया। वह भविष्यवक्ताओं के बारे में क्या जानता है? यह एकमात्र स्कूल है जो भविष्यवक्ताओं के बारे में पढ़ाता है।"

जबकि मैं उस स्कूल का ज़िक्र नहीं करूँगा, यह सौ साल या उससे ज्यादा समय से मशहूर है, खास तौर पर अपनी धार्मिक पत्रिका और दूसरी चीज़ों के लिए, क्योंकि यह भविष्यवाणी के भविष्यवादी हिस्सों पर बहुत ज़ोर देता है। इसराइल का भविष्य और अंत समय से जुड़ी सभी अद्भुत चीज़ें। इस महिला की समस्या यह थी कि मैं उस सेमिनरी से आया हूँ जहाँ से मैं यह व्याख्यान देने के लिए साइकिल से कुछ ही दूरी पर हूँ।

उसने कहा कि वे वहाँ भविष्यवाणी नहीं सिखाते। शायद वह यह कहना चाह रही थी कि वह विशेष सेमिनरी चार्ट खोलने और अंत समय के सभी सटीक कालानुक्रमिक विवरण भरने के लिए प्रसिद्ध नहीं है। अंत समय अवश्य आएगा।

ईसाई सिद्धांत या व्यवस्थित धर्मशास्त्र पर किसी भी पुस्तक के लिए एस्कैटोलॉजी एक व्यवहार्य और अच्छा विषय है। वहाँ कई तरह के विचार हैं। कुछ बहुत ही सरल, साफ और सीधे हैं।

कुछ बहुत, बहुत विस्तृत, बहुत, बहुत शाब्दिक, बहुत, बहुत कालानुक्रमिक रूप से तैयार किए गए। अंत के लिए तैयार होने के बारे में आपको जो कुछ भी जानना चाहिए। अब, मैं इस खंड में क्या करना चाहता हूँ, मुझे जो कुछ कहना है, वह इस्राएल के भविष्यवक्ताओं और भविष्य के लिए उनके द्वारा की गई भविष्यवाणी से संबंधित है।

मुझे जो अन्य बातें कहनी हैं, वे अधिक सामान्य अर्थों में भविष्यवक्ताओं से संबंधित हैं। लेकिन, आपको कुछ व्याख्यात्मक दिशा-निर्देश प्रदान करते हुए, जब आप भविष्यवक्ताओं का अध्ययन करते हैं, तो मुझे लगता है कि कुछ सिद्धांत और कुछ दिशा-निर्देश हैं जिन्हें आपको व्यापक रूप से ध्यान में रखना चाहिए। अब, इंजीलवाद को देखते हुए, भविष्यवाणी साहित्य की व्याख्या करने के लिए मुख्य रूप से, विशेष रूप से नहीं, बल्कि मुख्य रूप से दो अलग-अलग दृष्टिकोण रहे हैं।

खास तौर पर भविष्यवाणी साहित्य के वे हिस्से जिनमें भविष्य की घटनाएँ शामिल हैं। इन दो स्कूलों में से एक को अक्सर भविष्यवाणी के लिए सुधारवादी या वाचा संबंधी दृष्टिकोण के रूप में वर्णित किया जाता है, और दूसरे को भविष्यवाणी के लिए तथाकथित डिस्पेंसेशनल दृष्टिकोण के रूप में।

19वीं सदी के अंत में और खास तौर पर 20वीं सदी में, जब आप तथाकथित बाइबल स्कूल या बाइबल संस्थान आंदोलन का उदय पाते हैं, जो कई अन्य चीजों के अलावा स्कोफील्ड संदर्भ बाइबल से काफी प्रभावित था। और इनमें से कई बाइबल स्कूल, बहुत ही अनुमानित रूप से, जिसका इरादा व्यंग्यात्मक है, एस्केटोलॉजी और भविष्यवाणी सम्मेलनों पर बहुत जोर देते हैं। मैं बोस्टन क्षेत्र में बड़ा हुआ।

मुझे याद है कि चर्च हुआ करते थे और वे इन बाइबल कॉलेजों में से किसी एक से अध्यक्ष या डीन या बाइबल विभाग के किसी व्यक्ति को लाते थे। वस्तुतः आज इनमें से सभी बाइबल कॉलेज मौजूद हैं। उनमें से कई लोग मिशनरी क्षेत्र और ईसाई व्यवसायों में लोगों को सीधे तौर पर शामिल करने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षण संस्थान बनने के बजाय अधिक उदार कला शिक्षा में चले गए हैं।

लेकिन आप अंत समय, मसीह विरोधी, न्याय, महान क्लेश, मेघारोहण, महान श्वेत सिंहासन न्याय, इस धरती पर मसीह के हजार साल के शासन, इतिहास की अंतिम चरमोत्कर्ष लड़ाई, आर्मागिडन से संबंधित विभिन्न चीजों के बारे में बात करेंगे। और इस तरह के बहुत से जोर ने आम लोगों के बीच चर्चों में भविष्यवक्ताओं को लोकप्रिय बनाया। और, ज़ाहिर है, डिस्पेंसेशनल स्थिति के लिए अन्य लोकप्रिय साहित्य, द लेट ग्रेट प्लैनेट अर्थ जैसी किताबें, और अब, पिछले एक या दो दशक में, लेफ्ट बिहाइंड सीरीज़, जो इस डिस्पेंसेशनल दृष्टिकोण का एक रूप है।

आपको बस एक संक्षिप्त अवलोकन देने के लिए ताकि आप इन दो विचारों के बीच के अंतर को समझ सकें, जो इंजील चर्च के भीतर सोच पर बहुत हावी रहे हैं। मूल रूप से, डिस्पेंसेशनलिज़्म ने इज़राइल और चर्च के बीच अंतर किया है या करता है। वे दो अलग-अलग संस्थाएँ हैं।

इसलिए, बाइबिल के इज़राइल को संदर्भित करने वाली चीजों को नए इज़राइल, यानी चर्च द्वारा निगला या आध्यात्मिक नहीं बनाया जाता है, लेकिन उन्हें केवल बहुत ही शाब्दिक तरीकों से समझा जाना चाहिए। इसलिए, डिस्पेंसेशनलिज़्म ने पुराने नियम की भविष्यवाणी की शाब्दिक व्याख्या को अपनाने की कोशिश की है। यह इज़राइलोलोजी पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

पुराने नियम की भविष्यवाणी में निश्चित रूप से इस्राएल के भविष्य पर जोर दिया गया है, जैसा कि पृथ्वी के राष्ट्रों से एकत्र किए जाने, अंत समय की तैयारी में उनकी भूमि पर बहाल किए जाने में देखा जा सकता है। और यहूदी लोगों का भूमि पर फिर से इकट्ठा होना, वास्तव में, अंत के संकेतों में से एक है। डिस्पेंसेशनलिस्ट इस्राएल के एकत्र होने, वापसी से जुड़ी अन्य बातों पर भी जोर देते हैं।

एक पुनर्निर्मित मंदिर जैसी चीजें, जो निश्चित रूप से, मानवीय दृष्टिकोण से देखने पर, एक कठिन बात है। मंदिर पर्वत पर अभी दो मस्जिदें हैं, कोई उस संभावना को कैसे समझ सकता है? साथ ही, एक पुनर्जीवित पुजारी, एक पुनर्जीवित बलिदान प्रणाली, और एक लाल बछिया के साथ आने की आवश्यकता का विचार, जैसा कि संख्याओं की पुस्तक में वर्णित है कि यह जानवर बलिदान प्रणाली में वापसी के हिस्से के रूप में जला दिया जाएगा। यह प्रणाली इस विश्व शासक, अंत

समय में मसीह विरोधी के प्रकट होने के बारे में भी बात करती है, जो यहूदी लोगों के साथ एक वाचा बनाता है और फिर उसे तोड़ देता है।

लेकिन इन सबमें से, इस धरती पर एक भौतिक, सांसारिक, राजनीतिक राज्य स्थापित होगा जहाँ यरूशलेम बहुत केंद्रीय हो जाएगा, और मसीह राष्ट्रों पर शासन करेगा और उन पर शासन करेगा। यह व्यवस्थावादी दृष्टिकोण इस धरती पर क्लेश की अवधि शुरू होने से पहले सभी नरक के बिखरने से पहले यीशु की वापसी के लिए तर्क देता है। और इसलिए एक जल्द करने, एक उत्साह को छीनने का विचार, अंतिम सात वर्षों की प्रस्तावना होगी, जिसे व्यवस्थावादी अक्सर याकूब की परेशानी के समय के रूप में संदर्भित करते हैं।

लेकिन उस सात साल की अवधि के अंत में, मसीह संतों के साथ वापस आता है। वह पहली बार स्वर्गारोहण के लिए आता है, जो संतों के लिए है। वह संतों के साथ सात साल के क्लेश के बाद आता है।

और फिर धरती पर मसीह का शासन और शासन होगा। यह अनिवार्य रूप से व्यवस्थागत स्थिति है। यह इसराइल पर कैसे लागू होता है, बेशक, इसराइल शब्द का मतलब है कि इसराइल का अपना अलग कार्यक्रम है, जिसे चर्च से अलग किया जाना चाहिए।

इसके विपरीत, वाचा संबंधी दृष्टिकोण अपेक्षाकृत सरल है। वाचा संबंधी दृष्टिकोण, जो विशेष रूप से नहीं बल्कि अक्सर सहस्राब्दी सोच के साथ जोड़ा गया है, न कि युगवादी पूर्व-सहस्राब्दी सोच के साथ, वाचा संबंधी दृष्टिकोण चर्च को नए इस्राएल के रूप में देखता है। सहस्राब्दी दृष्टिकोण, या वाचा संबंधी दृष्टिकोण, मसीह को शासन करते और शासन करते हुए देखता है और चर्च के पूरे इतिहास में शासन करता और शासन करता रहा है।

यह पहले से ही हो रहा है। यह एक अस्तित्वगत वास्तविकता है क्योंकि मसीह चर्च में अपने पवित्र आत्मा के माध्यम से गतिशील रूप से शासन करता है और चर्च युग में शासन करता है। इसलिए, इस्राएल के लिए किसी भी विशिष्ट भविष्य का विवरण, भूमि पर वापसी, बलिदानों की बहाली, आमतौर पर इनमें से कोई भी चीज़ किसी भी तरह से शाब्दिक रूप से नहीं समझी जाती है।

प्रतीकात्मक रूप से, वे उस चीज़ को समझने का हिस्सा हैं जिसने परमेश्वर की योजना में इस्राएल की जगह ले ली है, इस्राएल को विस्थापित कर दिया है। अर्थात्, चर्च, जो दुनिया भर में बिखरा हुआ एक सार्वभौमिक निकाय है, मसीह पर उसके शासन और मानव हृदय में उसके शासन पर ध्यान केंद्रित करता है। यही वाचा धर्मशास्त्र है।

इसलिए, वाचा धर्मशास्त्र फिर क्राइस्टोलॉजी और आध्यात्मिकता पर ध्यान केंद्रित करता है और कहता है कि इज़राइल के भविष्य के बारे में यह भाषा आलंकारिक है और इसे किसी भी शाब्दिक तरीके से नहीं समझा जाना चाहिए या उस पर जोर नहीं दिया जाना चाहिए। इसलिए, आप इज़राइल के लिए किसी सटीक भविष्य की उम्मीद नहीं करते हैं। कई वाचा धर्मशास्त्री, सुधारवादी धर्मशास्त्री, इज़राइल के शहर में इज़राइल या इज़राइल की भूमि में यरूशलेम के लिए सांसारिक भविष्य नहीं देखते हैं, जैसे कि फिनलैंड के लोगों, आइसलैंड के लोगों या फिजी के लोगों का भविष्य नहीं है।

एक नया इज़राइल है और इसलिए इस भाषा की चर्च के प्रकाश में पुनर्व्याख्या की गई है। ठीक है, तो यहाँ मोटे तौर पर दो अलग-अलग दृष्टिकोण हैं। चर्च में इज़राइल के भविष्य को हम कैसे समझते हैं, इस सवाल को उठाते हुए, आप अक्सर इन शब्दों को इधर-उधर फेंकते हुए सुनते हैं।

क्या आप मिल से पहले के हैं? क्या आप मिल के बाद के हैं? क्या आप ए-मिल हैं? आपकी पीढ़ी इस पर उतना ज़ोर नहीं देती जितनी मेरी पीढ़ी देती है। फिर भी, आपको पता होना चाहिए कि मिलेनियम शब्द कहाँ से आया है। मिलेनियम शब्द दो लैटिन शब्दों से मिलकर बना है।

इसका पहला भाग हज़ार और वार्षिक है, जो लैटिन में वर्ष के लिए है। तो, सहस्राब्दी का मतलब हज़ार साल है। बाइबल में सिर्फ़ एक जगह है जहाँ उस हज़ार साल का ज़िक्र किया गया है।

यह रहस्योद्घाटन अध्याय 20 है। और इसमें उल्लेख किया गया है कि शैतान को एक हज़ार साल के लिए बांध दिया जाएगा और अंततः, एक हज़ार साल बाद, थोड़े समय के लिए रिहा कर दिया जाएगा। यह उन मृतकों के बारे में बात करता है जो जीवित हो जाते हैं और एक हज़ार साल तक मसीह के साथ शासन करते हैं।

प्रकाशितवाक्य 20, पद 4. बाकी मरे हुए लोग तब तक जीवित नहीं हुए जब तक कि हज़ार साल पूरे नहीं हो गए। इसलिए, सहस्राब्दि-पूर्ववादी जो मानते हैं कि इस धरती पर मसीह का शाब्दिक शासन होगा, वे कहेंगे कि दो पुनरुत्थान हैं - एक उन विश्वासियों के लिए जो मसीह के साथ शासन और शासन कर रहे हैं।

और फिर सहस्राब्दी के बाद जब अन्य लोग मृतकों में से जी उठते हैं और फिर उनका न्याय किया जाता है। इसलिए, वह कहता है, धन्य और पवित्र वे हैं जो पहले पुनरुत्थान में भाग लेते हैं। दूसरी मृत्यु का उन पर कोई अधिकार नहीं है क्योंकि वे परमेश्वर और मसीह के पुजारी होंगे और उसके साथ एक हजार साल तक राज करेंगे।

जब हज़ार साल पूरे हो जाएँगे, तो शैतान को उसकी कैद से रिहा कर दिया जाएगा। और फिर यह गोग और मागोग के इस महान युद्ध में आने वाले राष्ट्रों के बारे में बताता है। सभी युद्धों की जननी।

क्या यह आर्मागेडन जैसा ही है? क्या यह एक अलग युद्ध है? लेकिन, प्रकाशितवाक्य इन अंतिम घटनाओं के बारे में बात करता है। बेशक, गोग और मागोग को यहजेकेल 38 और 39 के अंतिम अध्यायों से लिया गया है। जिसे बाद में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में आगे बढ़ाया गया है।

तो फिर मैं क्या कह रहा हूँ? हज़ार साल के शासन के बारे में तीन अलग-अलग दृष्टिकोण हैं। मैंने आपको बाइबल में एक जगह पढ़कर सुनाई जहाँ लिखा है कि मसीह इस धरती पर हज़ार साल का शासन करेगा - प्रकाशितवाक्य 20।

परमेश्वर के लोगों के साथ शासन। अब, सहस्राब्दी-पूर्व युगवादी उस बिंदु पर कायम रहेंगे। और सहस्राब्दी-पूर्व गैर-युगवादी उस बिंदु पर कायम रहेंगे।

अर्थात्, मसीह इस धरती पर वापस आएगा और यरूशलेम से शारीरिक रूप से शासन करेगा। सहस्राब्दी के बाद की स्थिति एक बहुत ही सरल स्थिति है। यह शायद इंजील ईसाइयों के बीच सबसे कम लोकप्रिय है।

लेकिन, चर्च के इतिहास में पहले के समय में, इसकी लोकप्रियता अलग-अलग स्तर पर थी - सहस्राब्दि के बाद, जिसका अर्थ है सहस्राब्दि के बाद। सहस्राब्दि के बाद की स्थिति कहती है कि धीरे-धीरे सामाजिक परिवर्तन होगा जब तक कि सुसमाचार के प्रचार के सैकड़ों-सैकड़ों वर्षों में एक महान, प्रबुद्ध, आध्यात्मिक रूप से उभरता हुआ समाज नहीं बन जाता।

संक्षेप में, सहस्राब्दिवाद के बाद ईसाई धर्म का धीरे-धीरे पृथ्वी पर प्रभाव पड़ने की बात कही गई है। ईसाई मिशन सहस्राब्दिवाद के बाद के पदों का एक बहुत ही महत्वपूर्ण जोर है। ईसाई धर्म का संदेश पूरी पृथ्वी पर पहुँचने के साथ ही यह मजबूत होगा।

पीढ़ी दर पीढ़ी, दुनिया धीरे-धीरे यीशु को मसीहा के रूप में स्वीकार करेगी क्योंकि इस नई दुनिया को हथियारों से नहीं बल्कि आत्मा की शक्ति से जीता जाएगा। इस नई दुनिया के निर्माण के बाद, मसीहा आएगा। तो यह आध्यात्मिक मसीहा, या आध्यात्मिक समाज, सुसमाचार का प्रचार करने की कई पीढ़ियों के बाद उभरने वाला है।

इस सहस्राब्दी के बाद के दृष्टिकोण के विरोधियों का तर्क है कि दुनिया बेहतर से बेहतर होती जा रही है क्योंकि सुसमाचार की शक्ति दुनिया भर के मानव हृदयों को बदलने जा रही है; उस दृष्टिकोण के विरोधी कहते हैं, आपका मानव स्वभाव के बारे में बहुत आशावादी दृष्टिकोण है। आप नहीं जानते कि पाप ने लोगों के दिलों पर कैसे कब्ज़ा कर लिया है। आपको पूर्ण भ्रष्टता में विश्वास करना चाहिए।

इससे आपको ज़्यादा यथार्थवादी नज़रिया मिलेगा कि वहाँ बहुत ज़्यादा जिद्दी प्रतिरोध होने वाला है। और इसलिए, यह अंत में बहुत ज़्यादा मनुष्य-केंद्रित है। यह वहाँ जाने वाले चर्च पर निर्भर करता है।

लेकिन समाज में मानव हृदय का भ्रष्टाचार और सुसमाचार के प्रचार का प्रतिरोध वास्तव में ऐसा होने की अनुमति नहीं देगा। यह अंततः बहुत अधिक मानव-केंद्रित है। यह मनुष्यों और समाज के बारे में बहुत अधिक आशावादी दृष्टिकोण है।

दूसरों को इस तथ्य से भी कुछ समस्या है कि हम एक बहुलवादी दुनिया में रहते हैं। आपके पास एक अरब से ज़्यादा मुसलमान हैं जिनका एक समानांतर एजेंडा है। यह अल्लाह की इच्छा है कि पूरी दुनिया इस्लाम के अधीन हो।

और ईसाई व्यवस्था सामने आती है और कहती है, नहीं, पूरी दुनिया मसीह के अधीन हो जाएगी। और इसलिए, लोगों के दिलों को बदलने की पवित्र आत्मा की शक्ति इसका परिणाम होगी। एक बहुलवादी दुनिया में, संभावित रूप से, सुसमाचार को इस दृष्टि में अंत से पहले कितनी दूर जाना होगा कि दुनिया, उद्धरण, ईसाईकृत हो जाएगी?

और इस क्रमिक सामाजिक परिवर्तन से एक ईसाई जगत उभरेगा क्योंकि सुसमाचार की घोषणा के माध्यम से पूरी दुनिया प्रबुद्ध हो जाएगी। या मेरे कुछ यहूदी मित्र मुझसे कहेंगे, मान लीजिए कि अगर पूरी दुनिया को ईसाई बनाना है तो हम ईसाई एजेंडे का विरोध करते हैं। और फिर मसीह इस हज़ार साल की अवधि के बाद आता है, जिसे तब प्रतीकात्मक समय अवधि के रूप में लिया जाएगा जब सुसमाचार का प्रचार किया जाएगा।

अगर धक्का-मुक्की की नौबत आ जाए तो क्या होगा? ठीक है, तो यह सहस्राब्दी के बाद का दृष्टिकोण है। सहस्राब्दी का दृष्टिकोण जो विशेष रूप से ऑगस्टीन द्वारा 5वीं शताब्दी में और विशेष रूप से उस समय से कई अन्य लोगों द्वारा व्यक्त किया गया था। कहते हैं कि कोई सहस्राब्दी नहीं है - सहस्राब्दी।

इसलिए, इसलिए, मसीह के मानव हृदय में यह शासन और शासन जो चल रहा है और अंत समय तक चलता रहेगा। इसलिए, यहूदी लोग और जो भी भविष्यवाणी पाठ इज़राइल के बारे में कहता है, उसे फिर से व्याख्या किया जाना चाहिए क्योंकि चर्च मोक्ष रॉकेट का दूसरा चरण है।

पहला चरण समाप्त हो चुका है। और इसकी जगह एक नए आध्यात्मिक रूप से प्रबुद्ध इज़राइल ने ले ली है। और इसलिए, पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं में ठोस, सांसारिक, भू-राजनीतिक महत्व समाप्त हो गया है।

परमेश्वर किसी दिन यरूशलेम से शासन नहीं करने जा रहा है। वह वास्तव में केवल व्यक्तिगत जीवन में शासन करने और शासन करने में रुचि रखता है। ठीक है, तो यहाँ कई अलग-अलग दृष्टिकोण हैं।

मैं निश्चित रूप से कहूंगा कि पिछले कई दशकों से, वाचा धर्मशास्त्रियों और युगानुकूल धर्मशास्त्रियों के बीच आपसी संवाद और उनके बीच हुई बातचीत के कारण, युगानुकूलवाद धीरे-धीरे बदल रहा है और धीरे-धीरे एक बहुत अधिक प्रगतिशील दृष्टिकोण की ओर खुल रहा है, जहाँ ईश्वर का राज्य, भविष्य और यरूशलेम में समझी जाने वाली किसी चीज़ के बजाय, आध्यात्मिक क्षेत्र में संभावनाओं के रूप में अधिक से अधिक समझा जाने लगा है। जहाँ अमिलेनियलिस्ट युगानुकूलवादी की बात अधिक से अधिक सुन रहा है, वहीं अमिलेनियलिस्ट किसी प्रकार की भौतिक या सांसारिक अभिव्यक्ति की संभावनाओं के लिए खुला है जो ईश्वर अपने प्राचीन लोगों के लिए अभी भी रख सकता है। और जबकि संभवतः जितने विश्वासी हैं, उतने ही विचार हैं, इसका कारण यह है कि ये काफी जटिल मुद्दे हैं।

मेरे लिए, और मैं आपको बताऊँगा कि मैंने यह कैसे किया, मैं एक अग्नि-प्रजनन करने वाले डिस्पेंसेशनलिस्ट चर्च में पला-बढ़ा हूँ जहाँ मुझे इज़राइल के भविष्य के बारे में सभी उत्तर सिखाए गए थे। न केवल वे बाइबल में ही पाए गए, बल्कि बाइबल में सभी नोट्स जो हमारे पादरी ने मंच से इस्तेमाल किए, उन्होंने स्पष्ट किया कि पहले से क्या था। व्याख्या पहले से ही बाइबल में निहित थी। इसलिए नोट्स ने केवल स्पष्ट किया कि शास्त्र ने स्पष्ट रूप से क्या सिखाया।

फिर मैं एक सेमिनरी में गया जहाँ उनमें से कई विचारों को एक अधिक संविदात्मक और सुधारवादी सहस्राब्दि दृष्टिकोण द्वारा चुनौती दी गई थी। धर्मशास्त्र के बारे में आपको जो कुछ सीखना है, उनमें से एक यह है कि आपको धर्मशास्त्र में वास्तव में कई, कई आवाज़ें सुनने की ज़रूरत है। क्योंकि वहाँ एक वार्तालाप है पवित्रशास्त्र की यहूदी व्याख्या के बारे में विशिष्ट बात यह है कि यह प्रणाली नहीं है, यह एक उत्तर नहीं है, बल्कि यह संवादात्मक है, यह बातचीत है, या यह वही है जिसे यहूदी टिप्पणी के रूप में तनाव में चीजों को रखने के रूप में संदर्भित करते हैं।

रब्बी फलां यह कहते हैं, और रब्बी फलां यह कहते हैं। और इसलिए, आप इन विभिन्न शिक्षाओं की समझ को आगे-पीछे करके संतुलन बनाते हैं। इसलिए, मैंने उन दोनों पक्षों से बहुत कुछ सीखा है।

मैंने खुद इस पर चिंतन करने में बहुत समय बिताया है। और मैं आपको बताता हूँ कि मैं कहाँ हूँ। मैं व्यक्तिगत रूप से यह नहीं मान सकता कि परमेश्वर ने लगभग 2,000 वर्षों तक जो कुछ भी सिखाया, अब्राहम से लेकर यीशु तक, जब चर्च का जन्म हुआ और सबसे पहले चर्च के नेता सभी यहूदी थे, और ध्यान रखें कि आप उस चर्च में पहले 20 वर्षों तक प्रवेश नहीं कर सकते थे, जब तक कि आप यहूदी न हों।

29 ई. से 49 ई. तक, चर्च यहूदी धर्म के भीतर एक आंदोलन था। इसे नाज़रीन आंदोलन कहा जाता था, जैसा कि प्रेरितों के काम की पुस्तक हमें बताती है। और अगर आप यीशु के आंदोलन का हिस्सा बनना चाहते थे, तो आपको इसका हिस्सा बनने के लिए यहूदी धर्म अपनाना पड़ता था, जब तक कि, निश्चित रूप से, प्रेरितों के काम 15 में यरूशलेम की परिषद ने नहीं कहा, हाँ, गैर-यहूदी लोग यहूदियों में शामिल हो सकते हैं।

यहाँ वे संवेदनशीलताएँ हैं जिन्हें संरक्षित किया जाना चाहिए। तो, यह यहूदी धर्म के भीतर एक आंदोलन था। मैं बस इतना कह रहा हूँ कि लगभग 2,000 वर्षों से, परमेश्वर एक विशेष लोगों के माध्यम से काम कर रहा था।

और मैं प्रेरित पौलुस को मेरे पूर्वजों से किए गए सभी वादों को कहते हुए नहीं देख सकता जो मेरे पूर्वजों से किए गए थे, चाहे वे मांस, जातीय, राष्ट्रीय, शारीरिक और यहूदी लोग हों। अब एक नई इकाई है जो एक शाश्वत वाचा के बारे में उन सभी वादों, एक भूमि के बारे में है जो एक बेरिट ओलम एक शाश्वत वाचा का हिस्सा है, वह सब अब बंद हो गया है। भगवान ने अपना मन बदल लिया है। नहीं।

आपने पढ़ा कि रोमियों 9-11 में पॉल क्या कहता है और मेरे पास यह आत्म-लगाई गई बात थी। मैं रोमियों 9-11 पढ़ना चाहता था ताकि यह जान सकूँ कि यहूदी और गैर-यहूदी और परमेश्वर की योजना क्या थी, क्योंकि मैंने अपनी आध्यात्मिक यात्रा के दौरान इन दो मुख्य प्रणालियों को सुना था। मैंने रोमियों 9-11 में पॉल को इस्राएल के बारे में बोलते हुए पढ़ा, न कि उनके लिए वाचाएँ।

वह यूनानी में वर्तमान काल का उपयोग करता है। उनके लिए वाचाएँ हैं। वास्तव में, रोमियों 11 में पौलुस कहता है कि अन्यजातियों के विश्वास का आना ईश्वर की संप्रभु योजना में ईर्ष्या को जगाने

के लिए है, ईश्वर के भौतिक सांसारिक लोगों के प्रति ईर्ष्या को भड़काने के लिए है क्योंकि इस्राएल शारीरिक रूप से जारी है, भले ही अविश्वास के कारण शाखाएँ काट दी गई हों, ईश्वर उन्हें फिर से जोड़ने में सक्षम है।

पॉल ने यह भी कहा कि इस्राएल, जब शरीर में था, तो उसके प्राचीन रिश्तेदार अभी भी कुलपिताओं की खातिर प्रिय हैं। वे अभी भी परमेश्वर के उद्देश्यों के लिए अलग रखे गए पवित्र लोग हैं। पॉल ने आप और मैं जितना समझ लिया था, उससे कहीं ज़्यादा समझ नहीं पाया।

वास्तव में, रोमियों 9-11 के अंत में, यह कहने के बाद कि उद्धारकर्ता किसी दिन सिथ्योन से बाहर आएगा, याकूब से सभी अधर्म को दूर करेगा, और इसलिए सभी इस्राएल को संदर्भ के अनुसार बचाया जाएगा, वह निश्चित रूप से देह में इस्राएल के लोगों का उल्लेख कर रहा है, चाहे वह सभी समय का संचयी हो या हम भविष्य में मसीह के वापस आने पर उसके विश्वास को देखेंगे। लेकिन जब वह कहता है कि इस्राएल का चरमोत्कर्ष अभी आना बाकी है, तो सिथ्योन से निकलने वाले इस उद्धारकर्ता के साथ जुड़ जाता है। यशायाह की पुस्तक से कुछ छंदों को एक साथ लाता है।

उसके बाद उन्होंने कहा कि इजरायल का भौतिक अंत उसी तरह होगा जिस तरह से इसकी शुरुआत हुई थी। सिनाई में एक कॉर्पोरेट चुनाव हुआ था। अब, एक कॉर्पोरेट परिणति है।

जिसका विवरण पौलुस को नहीं मिला। वह रोमियों 11 के अंत में अपने हाथ ऊपर उठाता है और कहता है, ओह, परमेश्वर के इस रहस्य की बुद्धि, जिसे मैं नहीं समझता।

लेकिन पौलुस को अपने देशवासियों पर विश्वास था क्योंकि परमेश्वर ने अपने वादों को रद्द नहीं किया था। परमेश्वर अभी भी अपने वादों के प्रति सच्चा रहेगा। अब पुराने नियम में भौतिक इस्राएल के लिए वादे हैं, जो नए नियम में विस्तारित होते हैं और इसमें चर्च भी शामिल है।

इस बारे में कोई गलती न करें। जहाँ पुराने नियम में, इस्राएल को एक सटीक यहूदी संदर्भ में दर्शाया गया है, वहीं नए नियम में, गैर-यहूदी लोग यहूदियों में शामिल हो रहे हैं, और अक्सर, इस विचार या सिद्धांत या अर्थ पर बल दिया जाता है क्योंकि इस्राएल का एक विस्तारित संस्करण बनाया गया है क्योंकि अब्राहम को अन्य बच्चे पैदा करने थे।

मैं गलातियों 3:29 पर विश्वास नहीं कर सकता, क्योंकि जिस क्षण आप मसीह को हाँ कहते हैं, उसी क्षण बाइबल का तीन-चौथाई भाग रद्द हो जाता है। नहीं। जब आप मसीह को हाँ कहते हैं, तो पौलुस गलातियों से कहता है, यदि आप मसीह के हैं, तो आप अब्राहम के वंश हैं।

अब्राहम के वंश का हिस्सा होने के लिए, आप अब्राहम के लोगों, अब्राहम की भूमि या उन चीज़ों के प्रति उदासीन नहीं हो सकते हैं जिनका वादा परमेश्वर ने उस कुलपिता से किया था। और इसलिए, मुझे लगता है कि इस्राएल की समस्या का समाधान, आंशिक रूप से, उचित पद्धति को शामिल करना चाहिए। उचित पद्धति क्या है? जबकि इस्राएल और चर्च या इस्राएल और उसके भविष्य के बीच का संबंध, मुझे लगता है, जटिल है, चर्च में ऐतिहासिक रूप से समाधान के परिणामस्वरूप पवित्रशास्त्र की कुछ बहुत ही निर्विवाद समझ सामने आई है।

क्यों? दूसरी सदी में, काले सागर के किनारे, चर्च के एक पादरी थे जिनका नाम था मार्टिनियन। मार्टिनियन ने कहा कि पुराने नियम के परमेश्वर, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद; हमें अब और कुछ नहीं चाहिए। यहूदी लोगों के इस परमेश्वर को फेंक दो, उन्हें बाहर फेंक दो।

और इसलिए, वह वास्तव में ईसाई धर्म के सिद्धांत से हिब्रू बाइबिल को हटाना चाहता था। क्योंकि वह ईश्वर को एक अलग ईश्वर के रूप में देखता था। इसलिए, वास्तव में, इज़राइल को गंभीरता से नहीं लिया गया।

मार्सियन द्वारा अपमानित और बर्बाद किया गया था। शुक है, उसे रोम में घसीटा गया और 144 में एक विधर्मी के रूप में निंदा की गई क्योंकि यह पुराने नियम के लिए चर्च के लिए एक विनाशकारी परिणाम होता। अब आज चर्च में नियो-मार्सियनवाद के अवशेष या जेबें हैं।

अगर आप किसी ऐसे चर्च में जाते हैं जहाँ आपको पुराने नियम का उपदेश सुनने के लिए कई महीनों तक इंतज़ार करना पड़ता है, तो हो सकता है कि वहाँ थोड़ा-बहुत नव-मार्सियनवाद काम कर रहा हो। अगर आप किसी ऐसे धर्मशास्त्रीय सेमिनरी में जाते हैं जहाँ ग्रीक भाषा अनिवार्य है, और हिब्रू वैकल्पिक है या बिल्कुल भी नहीं पढ़ाई जाती है, तो आपको संभवतः नव-मार्सियनवाद काम कर रहा हो सकता है। ऐतिहासिक रूप से दूसरा दृष्टिकोण विशेष रूप से शुरुआती ईसाई शताब्दियों में, चर्च के पिता आए, और वे इज़राइल के बारे में इन महान भविष्यवाणियों को रूपक बनाना चाहते थे।

इस्त्राएल के भविष्य से जुड़ी कोई भी बात, खास तौर पर परमेश्वर का आशीर्वाद और उसकी आत्मा का उंडेलना और अनुग्रह और दया और उसके प्रेम की अभिव्यक्ति, हम उसे स्वीकार करेंगे। यही कलीसिया के लिए भविष्यवक्ताओं का संदेश है। और कलीसिया के पिताओं ने क्या किया? वे पुराने नियम में प्रतीकात्मक अर्थों को रूपक बनाने की ओर प्रवृत्त हुए या उन्होंने भविष्यवक्ताओं में मसीह संबंधी अर्थ ढूँढ़ लिया।

इस तरह उन्होंने पुराने नियम के कुछ हिस्सों को बचाया। लेकिन पुराने नियम के उन हिस्सों का अब चर्च में अर्थ है। फिर एक तीसरा दृष्टिकोण, चेरी-पिकिंग दृष्टिकोण, जिसका चर्च में कई लोगों ने सदियों से पालन किया है, ठीक से नहीं जानते हुए कि इज़राइल के साथ क्या करना है।

वे पुराने नियम को देखते हैं, और वे उन कानूनों, उन शिक्षाओं और उन सामग्रियों को लेते हैं जो उन्हें लगता है कि ईसाई धर्म के अनुकूल हैं, और वे कुछ गुणात्मक निर्णय के आधार पर बाकी सब को अनदेखा कर देते हैं कि क्या यह काम करेगा। मुझे लगता है कि भविष्यवाणियों के साहित्य की व्याख्या करने के हमारे समाधान के लिए, हमें वही करना चाहिए जो शुरुआती चर्च ने किया था। मुझे लगता है कि शुरुआती चर्च में एक पूर्वाग्रह था, और वह पूर्वाग्रह यह था कि चूंकि वे सभी यहूदी थे, इसलिए वे 2,000 वर्षों से अपने लोगों के बीच परमेश्वर के कार्य को जानते थे।

उन्होंने उस आस्था के नायकों का जश्न मनाया जो आप और मैं इब्रानियों की पुस्तक में करते हैं। वे सभी पुराने नियम के पात्र हैं। और इसलिए, उनका पूर्वाग्रह यह था कि नए नियम में कुछ भी ऐसा नहीं है जो पुराने नियम में पाए जाने वाले तथ्यों का खंडन कर सके।

यह इस पर निर्माण कर सकता है, इसका विस्तार कर सकता है, इसका अर्थ बढ़ा सकता है, लेकिन यह इसका खंडन नहीं करेगा। सभी शास्त्र परमेश्वर द्वारा दिए गए हैं और लाभदायक हैं। पॉल ने तीमुथियुस से कहा, मुख्य रूप से पुराने नियम का उल्लेख करते हुए।

चर्च की हर बड़ी परिषद ने कहा है कि सभी 66 पुस्तकें पूरी तरह से प्रेरित हैं और चर्च के जीवन में पूरी तरह से आधिकारिक हैं। चर्च ने ऐतिहासिक रूप से पुराने नियम को पवित्र शास्त्र के रूप में देखा है। सवाल यह है कि हम इसका उपयोग कैसे करते हैं और हमारी कार्यप्रणाली क्या होगी ताकि हम इसे पवित्र शास्त्र के रूप में स्वीकार करें बजाय इसके कि हम इसे खोलने से पहले ही इसे नष्ट कर दें।

अगर यह सिर्फ उपदेशात्मक है, हमें नए नियम में लाने के लिए एक स्प्रिंगबोर्ड है, तो हमें इसकी अब और ज़रूरत नहीं है। तो फिर अब इसकी ज़रूरत किसे है? इस सोच का एक बड़ा हिस्सा इस विचार से पैदा हुआ है, आप देखिए, कि भगवान की योजना ए विफल हो गई। कानून का पालन करें, पशु बलि चढ़ाएँ और खतना करवाएँ।

मैं इसे दो हज़ार साल तक चलाऊंगा। ओह, इज़राइल वाकई बुरी तरह विफल हो गया। अब मैं एक बेहतर तरीका लेकर आ रहा हूँ।

हम इस चीज़ को नया नियम कहेंगे। हम योजना ए को खत्म करने जा रहे हैं और अब यह चीज़ प्रेम, अनुग्रह, विश्वास और दया से भरी होगी। हमारे पास एक बेहतर तरीका है।

इसलिए, यदि पहले की सामग्री मौजूद है, तो इसका एकमात्र कारण विफलता को दर्शाना है और हमें इस नई सामग्री की आवश्यकता क्यों है। यह एक ऐसा दृष्टिकोण है जो बहुत से लोग पुराने नियम के बारे में रखते हैं, न कि इसे प्रेरित शास्त्र के रूप में देखते हैं। सबसे पहले चर्च के पास भजन संहिता उनकी भजन पुस्तक थी।

वह पवित्र शास्त्र था। 5वीं शताब्दी में ऑगस्टीन के दिनों में सभी 150 भजनों को याद करने के बिना आपको पादरी के सर्वोच्च पद पर भर्ती नहीं किया जा सकता था। आपको उन्हें दिल से जानना होता था।

यही हिब्रू विरासत है। मुझे लगता है कि इसका समाधान यह है कि आप वह न करें जो चर्च के पिता करते थे क्योंकि उनका प्रस्थान बिंदु नया नियम था, और वे पुराने नियम को देखते हैं। दुखद रूप से मार्टिन ने यही किया।

उन्होंने नए से शुरुआत की, पुराने पर नज़र डाली और कहा कि यह मेरे लिए नहीं है। व्याख्यात्मक रूप से, हमें वही करना चाहिए जो शुरुआती चर्च ने किया था। उनके पास सिर्फ एक बाइबल थी।

उनके पास केवल पुराना नियम था। यही उनका शुरुआती बिंदु था। आपको 4वीं शताब्दी ईस्वी तक जाना होगा, तभी आपको पवित्रशास्त्र के एक कैनन के रूप में प्रचलित सभी 27 पुस्तकों की पूरी सूची मिलेगी।

मूल रूप से, चर्च की पहली कुछ शताब्दियों में, पुराने नियम ने एक बड़ी भूमिका निभाई। इसे हमेशा पवित्रशास्त्र के रूप में सही ढंग से इस्तेमाल नहीं किया गया। जैसे-जैसे चर्च की संख्या बढ़ती गई और वह गैर-यहूदी होता गया, उस चर्च में यहूदी आवाज़ और भी ज़्यादा हाशिए पर चली गई।

आराधनालय में, चर्च में, चर्च अंततः अलग-अलग रास्तों पर चला गया, जो कम से कम जस्टिन शहीद के समय में दूसरी शताब्दी के मध्य में अंतिम रूप से तय हो गया था। हालाँकि हम चर्च के इतिहास में अन्य साक्ष्यों से जानते हैं, फिर भी यहूदी चौथी शताब्दी तक आराधनालय में बने रहे। मेरा सुझाव है कि हम प्रारंभिक चर्च के साथ क्या करें, आप नए नियम के बजाय पुराने नियम से शुरू करें।

यह परमेश्वर का वचन है। जब आप अपनी व्याख्या और पुराने नियम का अध्ययन कर लेते हैं, तो यह आपको पुराने नियम को गंभीरता से लेने के लिए मजबूर करता है। नए नियम की तैयारी के रूप में नहीं, और इससे मुझे केवल यही समझ में आता है कि, ओह, अब मुझे समझ में आया कि परमेश्वर को नया नियम क्यों बनाना पड़ा क्योंकि ये लोग भयानक थे।

वे असफल रहे। मैं समझ सकता हूँ कि परमेश्वर को एक बेहतर तरीके की आवश्यकता क्यों थी। क्षमा करें, वह आपका परिवार, मेरा परिवार और आरंभिक चर्च का परिवार है।

वे विश्वास के नायक हैं। और इसलिए, आप पुराने नियम से शुरू करते हैं, जिसमें शुरुआती चर्च के पास केवल एक बाइबल थी। यही उसे करना था।

फिर, प्रेरितिक लेखन ने उन पुराने नियम के शास्त्रों पर पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में मिड्राश, टिप्पणी और व्याख्यात्मक समझ बनाना शुरू कर दिया। आज, हम उन्हें प्रेरितिक लेखन या नया नियम कहते हैं, लेकिन नए का मतलब नई कार की तरह बिल्कुल नया नहीं है। इसका मतलब है कि परमेश्वर चीजों को फिर से नवीनीकृत कर रहा है।

और इसलिए आप पुराने से शुरू करते हैं, जिसका मतलब है कि आप पुराने को बहुत गंभीरता से लेंगे। क्या नए नियम में परमेश्वर के पास उस शास्त्र पर कोई और वचन है? आपका अंतिम कदम एक बार फिर पुराने नियम पर वापस जाना है, पुराने नियम के कुछ अंशों पर नए नियम के चिंतन को लेना, किसी भी तरह से नहीं, और फिर देखना है कि समाधान क्या हो सकता है। मुझे लगता है कि यह तय था।

यहाँ तक कि जब यीशु से पूछा गया कि क्या आप इस समय हमें राज्य वापस लौटा देंगे? प्रेरितों के काम 1. यीशु ने यह नहीं कहा, यार, तुम्हें राज्य का यह विचार कहाँ से मिला? क्या? तुम किस बारे में बात कर रहे हो? यह विचार कहाँ से आया? नहीं, उसने बस इतना कहा कि यह जानना तुम्हारा काम नहीं है कि कब और किस समय पर राज्य आएगा। यीशु उन पलों में से एक पल का

इस्तेमाल करके राज्य की पूरी अवधारणा को आध्यात्मिक रूप दे सकते थे। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया।

इसलिए, मुझे लगता है कि जैसा कि मैं सोमवार के व्याख्यान में करूँगा, भविष्य में बाइबल की भविष्यवाणी के कई विवरणों पर जोर देने के बारे में रुकने का कारण है। लेकिन ऐसा लगता है कि अगर हम शुरुआती चर्च का दृष्टिकोण अपनाते हैं, तो हम मजबूर हो जाते हैं। ये मेरे लोग हैं, पॉल कहते हैं।

भगवान उनके साथ काम कर रहे हैं। क्या वह उन सभी को रद्द कर देता है? अब अचानक? पुराने नियम में भी बहुत सी भाषा है जो भू-राजनीतिक है। मसीहा की धारणा।

मसीहा क्या करता है? वह एक योद्धा है। वह एक राजा है। वह एक शासक है।

यह भौतिक है। सांसारिक है। और जबकि यीशु इसे उस सटीक तरीके से पूरा करने के लिए नहीं आए थे, दूसरे आगमन की धारणा, उनमें से कई विषय इस धरती पर साकार होते प्रतीत होते हैं जब वे अंततः कार्यान्वित होते हैं।

तो, राज्य पहले से ही दो-चरणीय आध्यात्मिक है, लेकिन अभी तक ऐसा नहीं हुआ है। और यह अभी भी पुराने नियम की बहुत सी भविष्यवाणियों को उस सीमा में नहीं लाता है, जहाँ हम उन्हें भविष्य में किसी दिन साकार होते देखेंगे, मेरी राय में। ठीक है, इसके साथ, मैं समाप्त करने जा रहा हूँ।

यह डॉ. मार्व विल्सन द्वारा भविष्यवक्ताओं पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 5 है, भविष्यवक्ताओं को समझने के लिए व्याख्यात्मक सिद्धांत।